हिंदी दैनिक

न्यूज़ वायरस

वर्ष : 12 अंक : 127 | देहरादून, बृहस्पतिवार, 09 नवंबर, 2023 | मूल्य : एक रुपया | पृष्ठ : 08

राज्य स्थापना दिवस की आपको बधाई : मुख्यमंत्री

3

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने किए भगवान बद्री विशाल के दर्शन

बदरीनाथ धाम आगमन पर राष्ट्रपति का हुआ जोरदार स्वागत

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

चमोली , 9 नवंबर , राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उत्तराखंड स्थित भू-बैकुंठ धाम पहुंचकर भगवान बदरी विशाल के दर्शन किए। मंदिर में करीब 25 मिनट तक पूजा करते हुए राष्ट्रपति ने देश की सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना की। बदरीनाथ धाम आगमन पर उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि) और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राष्ट्रपति की अगवानी की।

राज्यपाल और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने की राष्ट्रपति की अगवानी

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की बीच भारतीय वायुसेना के हेलीकॉप्टर से बद्रीनाथ आर्मी हेलीपैड पहुंची हेलीपैड पर राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि) और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, बद्री केदार मंदिर समिति के अध्यक्ष अजेन्द्र अजय, अन्य जनप्रतिनिधियों सहित जिलाधिकारी हिमांशु खुराना एवं पुलिस अधीक्षक रेखा यादव ने राष्ट्रपति का स्वागत किया। यहां से राष्ट्रपति काफिले के साथ मंदिर पहुंची और मंदिर में बद्री विशाल की वेद पाठ एवं विशेष पूजा की।

बद्रीनाथ के मुख्य पुजारी रावल ईश्वर प्रसाद नंबूदरी एवं तीर्थ पुरोहितों ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधिवत पूजा संपन्न की। मंदिर समिति के अध्यक्ष अजेन्द्र अजय, उपाध्यक्ष किशोर पंवार एवं अन्य पदाधिकारियों ने राष्ट्रपति को बद्री विशाल का प्रसाद एवं अंग वस्त्र भेंट किया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंदिर परिसर में राष्ट्रपति को भोजपत्र पर बनी बद्रीनाथ मंदिर की प्रतिकृति, आरती और स्थानीय उत्पादों की टोकरी भेंट की। भू-बैकुंठ धाम की अलौकिक सुंदरता देख राष्ट्रपति अभिभूत दिखीं। मंदिर में पूजा दर्शन के बाद राष्ट्रपति बद्रीनाथ से श्रीनगर के लिए प्रस्थान किया।

मुख्य सचिव ने सड़कों से बड़े डस्टबिन हटाने के दिए निर्देश

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 9 नवंबर , मुख्य सचिव डॉ. एस. एस. संधु ने प्रदेश के सभी स्थानीय निकायों में ठोस कूड़ा प्रबन्धन के सम्बन्ध में बैठक ली। मुख्य सचिव ने अधिकारियों को ठोस कूड़ा प्रबंधन के लिए कार्य योजना तैयार किए जाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी स्थानीय निकायों से 100 प्रतिशत सेग्रीगेशन ऐट सोर्स लागू किया जाए।

मुख्य सचिव ने सभी स्थानीय निकायों में कूड़ा उठाने वाले वाहनों की संख्या की जानकारी माँगी। उन्होंने कहा कि स्थानीय निकायों के लिए आवश्यक वाहनों की शीघ्र व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। कहा कि सड़कों से बड़े डस्टबिन हटाए जाने चाहिए। उन्होंने सभी यूएलबी से आवासीय भवनों, व्यावसायिक भवनों और संस्थानों से श्रेणीवार घर - घर से कूड़ा उठान और कूड़े का स्रोत से पृथक्करण (सेग्रीगेशन एट सोर्स) की रिपोर्ट भी तलब की। उन्होंने इसके लिए रियल टाइम मॉनिटरिंग और थर्ड पार्टी सर्वे की व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने के भी निर्देश दिये।

मुख्य सचिव ने पेयजल निगम द्वारा संचालित सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट के सम्बन्ध में भी जानकारी ली। उन्होंने सभी एसटीपी का थर्ड पार्टी सर्वे और रियल टाइम मॉनिटरिंग की व्यवस्था किए जाने के निर्देश दिये गए। मुख्य सचिव ने प्रमुख सचिव शहरी विकास को भी सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट को लेकर अपनी टीम दुरुस्त किए जाने के निर्देश दिये। इस अवसर पर प्रमुख सचिव आर के सुधांशु सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य कमजोर लोगों तक पहुँचना : उदयराज सिंह, डीएम

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

रुद्रपुर ,9 नवम्बर, जिलाधिकारी उदयराज सिंह ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के सफल आयोजन हेतु एक महत्वपूर्ण बैठक जिला कार्यालय सभागार में ली। जिलाधिकारी ने निर्देशित करते हुए कहा कि 15 नवम्बर से जनपद में शुरू होने वाली विकसित भारत संकल्प यात्रा के सफल आयोजन हेतु जिला स्तर से लेकर ग्राम पंचायत स्तर तक नोडल अधिकारी नामित किये जाये तथा कार्यक्रम का ग्राम पंचायतवार रोस्टर जारी करने के निर्देश दिये। उन्होंने ग्रामवार अधिकारियों तथा कर्मचारियों की ड्यूटी लगाने के भी निर्देश दिये। उन्होंने जनपद में आयोजित होने वाले विभिन्न क्रियाकलापों का डाटा निर्धारित पोर्टल पर समयबद्धता से अपलोड करने हेतु भी नोडल अधिकारी नामित करने के निर्देश मुख्य विकास अधिकारी को दिये। डीएम ने सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का प्रचार-प्रचार स्थानीय भाषा में कराने के भी निर्देश दिये।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी विशाल मिश्रा ने बताया कि विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य उन कमजोर लोगों तक पहुँचना है जो विभिन्न योजनाओं के पात्र हैं, लेकिन लाभांवित नहीं हुए हैं। सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देना एवं जागरूकता लाना, योजनाओं का लाभ ले चुके व्यक्तियों के अनुभव साझा करने के माध्यम से सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों के साथ संवाद कायम करने के साथ ही यात्रा के दौरान सुनिश्चित विवरण के माध्यम से संभावित लाभार्थियों

का नामांकन करना है। उन्होंने बताया कि जनपद में 15 नवम्बर से शुरू हो रही विकसित भारत संकल्प यात्रा के लिए 9 जागरूकता वाहन उपलब्ध कराये जा रहे हैं जोकि जनपद की 375 ग्राम पंचायतों तथा 18 नगरीय क्षेत्रों में पहुँचकर विभिन्न योजनाओं की जानकारी देंगे।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी विशाल मिश्रा, अपर जिलाधिकारी जय भारत सिंह, परियोजना निदेशक हिमांशु जोशी, जिला विकास अधिकारी तारा ह्यांकी, उप जिलाधिकारी गौरव पाण्डे, अमृता सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी अमन अनिरूद्ध, जिला प्रोबेशन अधिकारी व्यौमा जैन, मुख्य उद्यान अधिकारी भावना जोशी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

विरासत में चित्रकला प्रतियोगिता और ट्रेजर हंट कार्यक्रम आयोजित किया गया

विरासत में शिंजिनी कुलकर्णी द्वारा कथक नृत्य प्रस्तुत किया गया

विरासत में ब्रजेश्वर मुखर्जी द्वारा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत किया गया

विरासत में विश्व प्रसिद्ध कव्वाल नियाज़ी बंधु ने अपने प्रस्तुति से देहरादून के लोगो का मन मोहा

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून- 08 नवंबर 2023- विरासत आर्ट एंड हेरीटेज फेस्टिवल 2023 के 13वें दिन के कार्यक्रम की शुरूआत चित्रकला प्रतियोगिता और ट्रेजर हंट कार्यक्रम से हुआ। जिसका संचालन कल्पना शर्मा द्वारा किया गया जहाँ चित्रकला प्रतियोगिता का विषय मेरा शहर मेरी विरासत था, इस दोरान बच्चों के बीच खुशी का माहौल देखा गया। कार्यक्रम मे केन्द्रीय विद्यालय ओएनजीसी, दून प्रेसीडेंसी स्कूल प्रेमनगर ,हिल फाउंडेशन स्कूल ,सन वैली स्कूल ,सेंट ज्यूड्स स्कूल ,दून इंटरनेशनल स्कूल, एसजीआरआर पब्लिक स्कूल बालावाला ,दून सरला अकादमी , टच वुड स्कूल ,व्हिज़किड इंटरनेशनल सीनियर सेकंडरी स्कूल ,आसरा ट्रस्ट, फिलफोट पब्लिक स्कूल, लतिका फाउंडेशन, कोषाध्यक्ष शिकार, हिल फाउंडेशन स्कूल, दून इंटरनेशनल स्कूल, एसजीआरआर पब्लिक स्कूल बालावाला, व्हिज़किड इंटरनेशनल सीनियर सेकंडरी स्कूल से कुल मिलाकर 400 बच्चों ने जोरों शोरो से भाग लिया और कार्यक्रम की समाप्ति के साथ सभी प्रतिभागियों को इनाम एवं प्रमाण पत्र दिया गया

आज के सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ राजीव कुमार सिंह, एजी (ए एंड ई), देहरादून एवं रीच विरासत के महासचिव श्री आर.के.सिंह एवं अन्य सदस्यों ने दीप प्रज्वलन के साथ किया।सांस्कृतिक कार्यक्रम की पहली प्रस्तुति में शिंजिनी कुलकर्णी द्वारा कथक नृत्य प्रस्तुत किया गया। शिंजनी कुलकर्णी जी का प्रदर्शन शिव वंदना से शुरू हुआ फिर पारम्परिक शुद्ध नृत्य 3 ताल और 4 ताल और दादरा के साथ जो उनके घराने की पारंपरिक रचना है जो उनके परदादा पंडित बिंगारी महाराज द्वारा लिखी गई है। उनके साथ शुभ महाराज तबला पर, गायन में ज़ोहेब हसीन, सितार वादन विशाल मिश्रा, बांसुरी वादन समीर खाना का रहा और पढ़ंत में सिया वर्मा ने सहयोग किया।

प्रतिभा, सौंदर्य, समर्पण, अनुग्रह, लालित्य.... सूची चलती रहती है और वास्तव में, आप ऐसे सभी विशेषण पा सकते हैं, लेकिन वह भी उस जादू का वर्णन करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा जो शिंजिनी कुलकर्णी अपने नृत्य प्रदर्शन के साथ मंच पर बुनती है। कालका बिंदादीन वंश की नौवीं पीढ़ी में जन्मी शिंजिनी कुलकर्णी कथक किंवदंती पंडित बिरजू महाराज की पोती हैं। तीन साल की उम्र से, शिंजिनी ने अपने दादा के संरक्षण में कथक का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया था, उनके अनुसार, "हमारे घर में सीखना एक संस्कार है"। शिंजिनी की पहली गुरु उनकी चाची ममता महाराज थीं, जिन्होंने परिवार के सभी बच्चों को बुनियादी प्रशिक्षण दिया। बाद में बिरजू महाराज उनके गुरु थे और उनके बाद उनके सबसे बड़े भाई पं. जयकिशन जी महाराज उनके गुरु रहें। वह इस विशाल विरासत का भार खूबसूरती से उठाती हैं, लेकिन वह कहती हैं कि उनकी विरासत एक व्यक्ति के लिए बहुत बड़ी है, पूरा कथक समुदाय उनकी विरासत को संभाल रहा है।

अकादमिक रूप से एक उत्कृष्ट छात्रा, शिंजिनी ने हाल ही में देश के प्रमुख कला कॉलेज, सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास ऑनर्स में स्नातक की पढ़ाई पूरी की है। अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता हासिल करने के साथ-साथ उन्होंने अपना प्रशिक्षण भी पूरी लगन और ईमानदारी के साथ जारी रखा है। उन्होंने खजुराहो नृत्य महोत्सव, संकट मोचन समारोह, ताज महोत्सव, चक्रधर समारोह, कालिदास महोत्सव, कथक महोत्सव आदि जैसे प्रतिष्ठित समारोहों में प्रदर्शन किया है। उन्होंने भारत के विभिन्न शहरों और न्यूयॉर्क जैसे विदेशों में कई एकल प्रदर्शन और समूह शो दिए हैं। , सैन फ्रांसिस्को, ह्यूस्टन, मिनियापोलिस, बैंकॉक, तेहरान आदि कुछ नाम हैं, और उन्हें अपने करियर की छोटी सी अवधि में दर्शकों से स्नेहपूर्ण सराहना और आशीर्वाद मिला है।

उनका बॉलीवुड से जुड़ाव रहा है और अपने नाना की तरह यह भी छोटा रहा है। उन्होंने मुजफ्फर अली की जानिसार, बंगाली

फिल्म हर हर ब्योमकेश और रवि किशन के साथ एक भोजपुरी फिल्म में अभिनय किया है। हाल ही में उन्हें बेहद प्रतिष्ठित मंच टेडएक्स पर दो बार बोलने का सौभाग्य मिला, जहां उन्होंने अपने शक्तिशाली विचारों और भाषण से कई लोगों को प्रेरित किया। शिंजिनी नवगठित शुद्ध शास्त्रीय आधारित पर्कशन बैंड - लायाकरी की भी सदस्य हैं। उन्हें अपने दादा की कोरियोग्राफी जैसे नृत्य केली, एडिटिंग, होली उत्सव, कृष्णायन और लोहा का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला है। उनके नाम कई पुरस्कार भी है जिमें मुख्य रूप से 2018 में, उन्हें नई दिल्ली में तराना फाउंडेशन का युवा प्रतिभा पुरस्कार मिला, 2017 में, शिंजिनी को अंतर्राष्ट्रीय कटक नृत्य महोत्सव में नृत्य शिरोमणि की उपाधि से सम्मानित किया गया था, 2017 में, उन्हें संगीत कला निकेतन, जयपुर द्वारा परंपरा सम्मान प्राप्त हुआ। उन्हें प्रतिष्ठित श्रीमती भी प्राप्त हुई। 2015 में क्रिशा हंगल मेमोरियल अवार्ड ने उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य के क्षेत्र में एक उभरती प्रतिभा के रूप में स्वीकार किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की दुसरी प्रस्तुति में ब्रजेश्वर मुखर्जी द्वारा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत किया गया... जहां उन्होंने राग भूपाली से अपना प्रदर्शन शुरू किया फिर राग कामोद सुनाया और फिर दो ठुमरी जो याद पिया की ऐ, का करूं सजनी पिया ना आये के साथ अपना प्रदर्शन समाप्त करेंगे। ब्रजेश्वर मुखर्जी के साथ पंडित धर्मनाथ झा जी तबले पर, पंडित धर्मनाथ मिश्रा जी हारमोनियम पर और नितिन शर्मा और सलोनी रावत तानपुरे पर सगत दी।

ब्रजेश्वर मुखर्जी कोलकाता, भारत के एक प्रसिद्ध हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायक हैं। उन्हें संगीत की शिक्षा उनके माता-पिता ने दी थी और बाद में उन्होंने बिष्णुपुर घराने के असित रॉय के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण लेना जारी रखा। वह वर्तमान में प्रख्यात गायक पं. अजय चक्रवर्ती के शिष्य हैं। उन्होंने रेडियो कार्यक्रमों, स्टेज शो और प्रकाशित एल्बमों में बड़े पैमाने पर काम किया है। ब्रजेश्वर मुखर्जी कई पुरस्कारों और सम्मानों के प्राप्तकर्ता हैं, जिनमें संगीत नाटक अकादमी से 'उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार', कलकत्ता विश्वविद्यालय से 'धनंजय स्मृति पुरस्कार', श्रुतिनंदन संस्थान से 'श्रुतिनंदन' पुरस्कार और पुणे से 'गण वर्धन' शामिल हैं। ब्रजेश्वर जी ऑल इंडिया रेडियो, कोलकाता के बी-हाई ग्रेड नियमित कलाकार हैं। वह संगीत के बारे में अपना ज्ञान साझा करके कई लोगों के जीवन को प्रभावित करने में सक्षम रहे हैं। वह आईटीसी संगीत रिसर्च अकादमी और श्रुतिनंदन में जूनियर गुरु के रूप में कार्य करते हैं। ये दोनों संस्थान अत्यधिक प्रतिष्ठित हैं और भारत में संगीत के मंदिर माने जाते हैं। वह कई लोगों के दिलों तक पहुंचने के लिए दुनिया भर में यात्रा करके सुंदर सीमाहीन संगीत को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की तीसरी प्रस्तुति में नियाज़ी बंधु द्वारा कव्वाली प्रस्तुत किया गया..... उन्होंने अमीर खुसरो द्वारा लिखित क्वाल प्रस्तुत करके प्रदर्शन शुरू किया, उसके बाद कृपा करो महाराज, सांसों की माला, छाप तिलक, इश्क में तेरे कोहे गम, और फिर आज रंग ह रीमा के साथ प्रदर्शन की सम्पति की । उनके के संगत मे माजिद नियाज़ी, मुकरम नियाज़ी और हामिद नियाज़ी थे जो कोर्स और मुख्य कोर्स में थे, बोसिन जी कीबोर्ड पर, वासिफ जी ढोलक पर और विजय जी तबले पर थे ।

रामपुर घराने के प्रसिद्ध कव्वाल और सूफी गायक, शाहिद नियाज़ी और सामी नियाज़ी (नियाज़ी बंधु), जो अपने संगीत के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हैं,नियाज़ी ब्रदर्स ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन पूरी ईमानदारी से किया है। नियाजी बंधु बहुमुखी गायन के लिऐ जाने जाते हैं जैसे कव्वाली, नात, ग़ज़ल, भजन, गीत, लोक आदि। वे कव्वाली की रामपुर घराने की 250 साल पुरानी पारिवारिक परंपरा को जारी रख रहे हैं। उस्ताद नियाज़ी ने कव्वाली को "रूह-ए-ग़िज़ा" (आत्मा के लिए भोजन) के रूप में वर्णित किया है। कव्वाली का निर्माण 13वीं शताब्दी में दिल्ली के चिश्ती संप्रदाय के सूफी संत अमीर खुसरो देहलवी द्वारा भारतीय, फारसी, तुर्की और अरबी संगीत परंपराओं को मिलाकर किया गया था।

तबला वादक शुभ जी का जन्म एक संगीतकार घराने में हुआ था। वह तबला वादक श्री किशन महाराज के पोते हैं। उनके पिता श्री विजय शंकर एक प्रसिद्ध कथक नर्तक हैं, शुभ को संगीत उनके दोनों परिवारों से मिला है। बहुत छोटी उम्र से ही शुभ को अपने नाना पंडित किशन महाराज के मार्गदर्शन में प्रशिक्षित किया गया था। वह श्री कंठे महाराज.की पारंपरिक पारिवारिक श्रृंखला में शामिल हो गए। सन 2000 में, 12 साल की उम्र में, शुभ ने एक उभरते हुए तबला वादक के रूप में अपना पहला तबला एकल प्रदर्शन दिया और बाद में उन्होंने प्रदर्शन के लिए पूरे भारत का दौरा भी किया। इसी के साथ उन्हें पद्म विभूषण पंडित के साथ जाने का अवसर भी मिला। शिव कुमार शर्मा और उस्ताद अमजद अली खान. उन्होंने सप्तक (अहमदाबाद), संकट मोचन महोत्सव (वाराणसी), गंगा महोत्सव (वाराणसी), बाबा हरिबल्लभ संगीत महासभा (जालंधर), स्पिक मैके (कोलकाता), और भातखंडे संगीत महाविद्यालय (लखनऊ) जैसे कई प्रतिष्ठित मंचों पर प्रदर्शन किया है।

27 अक्टूबर से 10 नवंबर 2023 तक चलने वाला यह फेस्टिवल लोगों के लिए एक ऐसा मंच है जहां वे शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य के जाने-माने उस्तादों द्वारा कला, संस्कृति और संगीत का बेहद करीब से अनुभव कर सकते हैं। इस फेस्टिवल में परफॉर्म करने के लिये नामचीन कलाकारों को आमंत्रित किया गया है। इस फेस्टिवल में एक क्राफ्ट्स विलेज, क्विज़ीन स्टॉल्स, एक आर्ट फेयर, फोक म्यूजिक, बॉलीवुड-स्टाइल परफॉर्मेंसेस, हेरिटेज वॉक्स, आदि होंगे। यह फेस्टिवल देश भर के लोगों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और उसके महत्व के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी प्राप्त करने का मौका देता है। फेस्टिवल का हर पहलू, जैसे कि आर्ट एक्जिबिशन, म्यूजिकल्स, फूड और हेरिटेज वॉक भारतीय धरोहर से जुड़े पारंपरिक मूल्यों को दर्शाता है।

रीच की स्थापना 1995 में देहरादून में हुई थी, तबसे रीच देहरादून में विरासत महोत्सव का आयोजन करते आ रहा है। उदेश बस यही है कि भारत की कला, संस्कृति और विरासत के मूल्यों को बचा के रखा जाए और इन सांस्कृतिक मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाया जाए। विरासत महोत्सव कई ग्रामीण कलाओं को पुनर्जीवित करने में सहायक रहा है जो दर्शकों के कमी के कारण विलुप्त होने के कगार पर था। विरासत हमारे गांव की परंपरा, संगीत, नृत्य, शिल्प, पेंटिंग, मूर्तिकला, रंगमंच, कहानी सुनाना, पारंपरिक व्यंजन, आदि को सहेजने एवं आधुनिक जमाने के चलन में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और इन्हीं वजह से हमारी शास्त्रीय और समकालीन कलाओं को पुणः पहचाना जाने लगा है।विरासत 2023 आपको मंत्रमुग्ध करने और एक अविस्मरणीय संगीत और सांस्कृतिक यात्रा पर फिर से ले जाने का वादा करता है।

देवभूमि में महामहिम का स्वागत है : धामी

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के लिए मुंबई गए मुख्यमंत्री धामी ने देहरादून पहुँचते ही राजभवन का रुख किया जहाँ मुख्यमंत्री धामी ने राजभवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से शिष्टाचार भेंट की और उनका देवभूमि उत्तराखंड में स्वागत किया। इस दौरान राज्यपाल रिटायर्ड ले.ज. गुरमीत सिंह भी मौजूद रहे।

राज्य स्थापना दिवस की आपको बधाई : मुख्यमंत्री

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 9 नवम्बर, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेशवासियों को राज्य स्थापना दिवस की बधाई एवं शुभकामना दी है। मुख्यमंत्री ने राज्य निर्माण के सभी अमर शहीदों, राज्य आन्दोलनकारियों एवं देश के लिये सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उत्तराखण्ड की मजबूत नींव रखने वाले पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेई को भी राज्य की जनता की ओर से नमन किया है। मुख्यमंत्री ने अपने संदेश में कहा है कि प्रदेश की महान जनता के आशीर्वाद, सरकार की मजबूत इच्छाशक्ति, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के उत्तराखण्ड के प्रति विशेष लगाव और केंद्र सरकार के सहयोग से उत्तराखण्ड तेजी से विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का देवभूमि उत्तराखण्ड तथा उत्तराखण्डवासियों से अपार आत्मिक स्नेह है। उन्होंने 21 वीं शदी के तीसरे दशक को उत्तराखण्ड का दशक बताया है, प्रधानमंत्री ने केदारनाथ धाम के पुनर्निर्माण कार्यों तथा बद्रीनाथ धाम के विकास कार्यो की भांति ही अब मानसखंड के विकास पर भी स्वयं की इच्छा और रूचि व्यक्त की है। उनकी हाल ही की आदि कैलाश तथा जागेश्वर धाम की यात्रा से मानसखण्ड क्षेत्र में पर्यटन एवं कुमाऊँ क्षेत्र के पौराणिक एवं ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों पर बड़ी संख्या में पर्यटकों के आवागमन की नई उम्मीद जगी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह केंद्र सरकार के सहयोग का ही परिणाम है कि 2012 से 2017 के बीच प्रतिवर्ष मिलने वाला वार्षिक अनुदान रूपये 5615 करोड़ रूपये 2017 से 2022 के डबल इंजन युग में बढ़कर दोगुनी रूपये 11168 करोड़ हो गयी है। यही नहीं इस अवधि में केन्द्र सरकार के सहयोग से उत्तराखण्ड में अनेक उच्च स्तरीय संस्थाएं स्थापित हुई हैं। प्रदेश में रेल, सड़क, हवाई यात्रा सुविधाओं का तेजी से विकास किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में निवेश के लिए पर्यटन, आयुष व वेलनेस, आईटी, सौर ऊर्जा सहित सर्विस सेक्टर पर विशेष फोकस किया जा रहा है। पर्वतीय क्षेत्रों को एमएसएमई के केंद्र में रखा गया है। सीमांत तहसीलों के लिए मुख्यमंत्री सीमांत क्षेत्र विकास योजना शुरू की है। राज्य में निवेश की संभावनाओं के दृष्टिगत अगले माह 9 व 10 दिसम्बर को देहरादून में ग्लोबल इन्वेस्टर समिट का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें 2.50 लाख करोड़ के निवेश का लक्ष्य है। पिछले एक वर्ष से देश, विदेश और राज्य के प्रमुख उद्योग समूहों एवं स्टेकहोल्डरों के साथ लगातार बैठकें आयोजित की गई। लंदन, बर्मिंघम, अबू धाबी, दुबई, चेन्नई, मुंबई, दिल्ली, बैंगलोर, अहमदाबाद जैसे देश और दुनिया के प्रमुख शहरों में निवेश को आकर्षित करने हेतु भव्य एवं सफल रोड शो आयोजित किये गये।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अब तक के रोड शो से लगभग एक लाख, 24 हजार करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, इससे यह सिद्ध होता है

कि देश ही नहीं बल्कि विदेशों के उद्यमी भी उत्तराखंड में निवेश करने के लिए उत्साहित हैं। सरलीकरण, समाधान, निस्तारण और संतुष्टि के मूल सिद्धांत को अपनाकर राज्य में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। इन प्रयासों से हम राज्य की जीएसडीपी को आगामी 5 वर्षों में दुगना करने में सफल होंगे। राज्य में जी 20 की सभी बैठकों के हमारे अनुभव अविस्मरणीय रहे हैं। जी 20 के सम्मेलनों का आयोजन हमारे लिए नए अवसर, नए अनुभव, अपनी पारम्परिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विरासत, पर्यटन की क्षमताओं और सॉफ्ट पावर को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने का स्वर्णिम अवसर रहा। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में महिलाओं का कल्याण और विकास ही हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु लखपति दीदी योजना के तहत महिला स्वयं सहायता समूहों को 5 लाख तक का ऋण बिना ब्याज के दिया जा रहा है। हमने 2025 तक 1.25 लाख महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा है। राज्य की महिलाओं को सरकारी नौकरी में क्षैतिज आरक्षण के लिए विधेयक लागू किया जा चुका है। 'मुख्यमंत्री सशक्त बहना उत्सव योजना' के तहत महिला समूहों द्वारा उत्पादित सामग्री को ब्लॉक स्तर पर बाज़ार उपलब्ध कराया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड देवभूमि के साथ वीर भूमि होने के नाते सैनिकों और उनके परिजनों का सम्मान हमारा कर्तव्य है। देहरादून में भव्य सैन्य धाम की स्थापना की जा रही है। राज्य में वीरता पदक से सम्मानित सैनिकों को देय एकमुश्त अनुदान में वृद्धि की गई है। राज्य सरकार ने राज्य आंदोलनकारियों को सरकारी नौकरियों में दस प्रतिशत आरक्षण देने का निर्णय लिया है। राज्य आंदोलनकारियों की पेंशन बढ़ाने के साथ ही राज्य आंदोलकारियों की मृत्यु के पश्चात उनके आश्रितों को भी पेंशन देने का निर्णय लिया है। सरकार राज्य आंदोलनकारियों को 'एक समान पेंशन' देने के लिए कार्ययोजना तैयार कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में खेल एवं खिलाड़ियों के हित में नई खेल नीति बनायी गई है। खिलाड़ियों को जमीनी स्तर से खेल क्षेत्र में रूचि लाने हेतु 14 से 23 वर्ष तक के खिलाड़ियों को ''मुख्यमंत्री खिलाड़ी प्रोत्साहन योजना'' के अंतर्गत 2000 प्रति माह छात्रवृत्ति एवं 10 हजार रुपए प्रति वर्ष संबंधति खेलों हेतु किट खरीदने के लिए दिए जा रहे है। ''मुख्यमंत्री उदीयमान खिलाड़ी उन्नयन योजना'' में 08 से 14 वर्ष के उभरते खिलाड़ियों को 1500 रूपये प्रतिमाह की खेल छात्रवृत्ति दी जा रही है। साथ ही खिलाड़ियों को नियमानुसार त्वरित वित्तीय लाभ दिये जाने हेतु 'मुख्यमंत्री खेल विकास निधि' की स्थापना भी की गयी है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि राज्य की युवा प्रतिभा के साथ न्याय हो, यह हमारा ध्येय है। राज्य सरकार की भर्तियों में घोटाले करने वाले दोषियों के खिलाफ प्रदेश में पहली बार बड़े स्तर पर कड़ी कार्यवाही की गई है। देश का सबसे सख्त नकल विरोधी कानून लागू किया गया।राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा जारी कैलेण्डर के अनुसार पारदर्शिता के साथ भर्ती प्रक्रियाए समयबद्धता से संचालित की जा रही है।

उन्होंने कहा कि सरकारी नौकरियों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के साथ ही स्वरोजगार को भी अधिक से अधिक प्रोत्साहित किया जा रहा है। राज्य सरकार स्टार्ट-अप को बढ़ावा देने के लिए 200 करोड़ का वेंचर फण्ड तैयार करने जा रही है। इससे युवा उद्यमियों को सरकारी स्तर पर फण्ड मिल सकेगा।मुख्यमंत्री कौशल उन्नयन एवं वैश्विक रोजगार योजना को मंजूरी देने के साथ राज्य के युवाओं को देश से बाहर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाने के लिये राज्य में विदेश रोजगार प्रकोष्ठ का गठन किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा भ्रष्टाचार पर प्रभावी नियंत्रण के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गये हैं। देश का सबसे कठोर नकल विरोधी कानून सबसे कम समय में हमने लागू किया है। भ्रष्टाचार की शिकायतों को दर्ज करने के लिए हमने जनता के लिए 1064 वेब एप लॉन्च किया है। अपणि सरकार पोर्टल, ई-कैबिनेट, ई-ऑफिस, सीएम डैशबोर्ड उत्कर्ष,सीएम हेल्पलाइन 1905, सेवा का अधिकार और ट्रांसफर एक्ट की पारदर्शी व्यवस्था बनाकर राज्य में भ्रष्टाचार के समूल नाश का प्रयास किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखण्ड में समान नागरिक संहिता लागू करने की दिशा में हमनें प्रभावी कदम उठाये हैं। राज्य में कोई भी किसी पंथ, समुदाय, धर्म, जाति का हो सबके लिये एक समान कानून हो, यही हमारा प्रयास है।समान नागरिक सहिंता सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास के मूलमंत्र की दिशा में बढ़ाया गया महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि देवभूमि उत्तराखण्ड में गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी आस्थावान श्रद्धालुओं ने चारधाम में एक नया रिकॉर्ड बनाया हैं। इस वर्ष अभी तक 55 लाख से अधिक चारधाम यात्रियों का आगमन हो चुका है।चारधाम यात्रा के सफल संचालन के पीछे केन्द्र सरकार का अभूतपूर्व सहयोग तथा राज्य सरकार की प्रभावी कार्ययोजना तथा क्रियान्वयन रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू कर सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आसानी से उपलब्ध करवाने के लिए मिशन मोड पर कार्य किया जा रहा है। हाल ही में राज्य में पीएम श्री योजना का शुभारम्भ हुआ है तथा 141 पीएम श्री विद्यालय तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आवासीय विद्यालयों का शिलान्यास किया गया है।प्रदेश की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव की क्षमता रखने वाले विद्या समीक्षा केन्द्र का शुभारम्भ हो चुका है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा आयुष्मान योजना का लाभ जन जन तक पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। आयुष्मान कार्ड व आभा आई डी बनाने का भी लक्ष्य निर्धारित किया गया है। निशुल्क जांच योजना के तहत मरीजों को 207 प्रकार की पैथोलॉजिकल जांचों की निशुल्क सुविधा दी जा रही है। ऊधमसिंहनगर में एम्स का सैटेलाईट सेंटर बनने से एक बड़ी आबादी को उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधा मिलेगी। राज्य सरकार का संकल्प 2025 तक उत्तराखण्ड को ड्रग फ्री तथा 2024 तक क्षय रोग मुक्त प्रदेश बनाने का है।

मुख्यमंत्री ने उत्तराखण्ड को आगामी दशक तक देश का विकसित सर्वश्रेष्ठ एवं अग्रणी राज्य बनाने के लिए सरकार एवं प्रशासन के साथ ही प्रत्येक उत्तराखण्डवासी से सहयोग की अपेक्षा की है। उन्होंने का कि गत 23 वर्षो में राज्य ने कई उपलब्धियां प्राप्त की हैं, किन्तु अभी हमें बहुत आगे जाना है तथा देवभूमि उत्तराखण्ड को एक प्रगतिशील, उन्नत एवं हर क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाना है। इस महान उद्देश्य की प्राप्ति जनसहयोग से ही संभव है। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि सभी के सहयोग एवं विकल्प रहित संकल्प से हम इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि देवभूमि उत्तराखण्ड का अनुपम सौंदर्य, पर्वतीय परिदृश्य और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत इसे अद्वितीय राज्य बनाते हैं। हमें राज्य के समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा ऐतिहासिक मूल्यों के प्रति भी समर्पित रहना होगा।

महाराज ने प्रदेश वासियों को राज्य स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दी

देहरादून , 9 नवंबर , प्रदेश के लोक निर्माण, पर्यटन, सिंचाई, पंचायतीराज, ग्रामीण निर्माण, जलागम, धर्मस्व एवं संस्कृति मंत्री सतपाल महाराज ने पृथक राज्य आंदोलन में मुख्य भूमिका निभाने वाले राज्य आंदोलनकारियों के योगदान और इस दौरान शहीद हुए आंदोलनकारियों को नमन करते हुए समस्त प्रदेशवासियों को 9 नवंबर राज्य स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दी हैं। कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज ने कहा कि कई वर्षों के लम्बे संघर्ष के बाद 9 नवम्बर 2000 को उत्तराखंड को 27वें राज्य के रूप में भारत गणराज्य में शामिल किया गया था। हमारा राज्य संस्कृति, जातीयता और धर्म का समामेलन होने के साथ-साथ भारत के सबसे पसंदीदा पर्यटन स्थलों में से एक है। उत्तराखंड वासियों को हमेशा प्रेम, सौहार्द, प्राकृतिक सौंदर्य और समृद्ध सांस्कृतिक के लिए जाना जाता है।उन्होंने कहा कि राज्य स्थापना दिवस के मौके पर हम सभी उत्तराखंड राज्य आंदोलन के वीर शहीदों को नमन करते हुए उत्तराखंड की मूल भावना के अनुरूप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर इस दशक को उत्तराखंड का दशक बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

DESTINATION UTTARAKHAND
GLOBAL INVESTORS SUMMIT 2023
December, 2023 Dehradun (Uttarakhand) Peace To Prosperity

उत्तराखण्ड शासन

G20 भारत 2023 INDIA वसुधैव कुटुम्बकम् ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

माननीय प्रधानमंत्री जी ने 21वीं सदी के तीसरे दशक को उत्तराखण्ड का दशक कहा है। हम प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरूप राज्य को हर क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाने के लिये विकल्प रहित संकल्प के साथ काम कर रहे हैं।

पुष्कर सिंह धामी मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

हार्दिक शुभकामनाएं

21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हर संभव प्रयास। आज उत्तराखण्ड, इन दोनों ही स्तंभों को लगातार मजबूत कर रहा है।
ये दशक उत्तराखण्ड का दशक होगा

नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री

केदारनाथ बदरीनाथ धाम में 1300 करोड़ रुपये के पुनर्निर्माण/पुनर्विकास कार्य, चारधाम यात्रा के दौरान रिकॉर्ड 55 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किये दर्शन।

मानस खण्ड मंदिर माला मिशन।

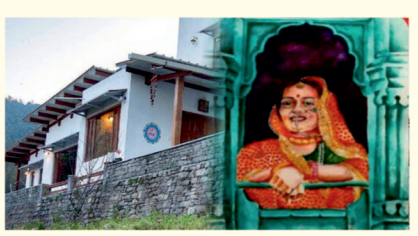

4000 से अधिक होम-स्टे विकसित, 16 ईको टूरिज्म डेस्टिनेशन का विकास।

मुख्यमंत्री सशक्त बहना उत्सव योजना के तहत महिला समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों को प्रोत्साहन।

पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा उत्तराखण्ड को बेस्ट एडवेंचर टूरिज्म डेस्टिनेशन का अवार्ड।

रेल कनेक्टिविटी : ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना, वन्दे भारत एक्सप्रेस ट्रेन, टनकपुर बागेश्वर रेल लाईन।

रोड कनेक्टिविटी : चारधाम ऑल वेदर रोड, दिल्ली-देहरादून एलिवेटेड रोड व अन्य राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास।

रोप-वे कनेक्टिविटी : पर्वतमाला परियोजना, गौरीकुण्ड-केदारनाथ रोप-वे कनेक्टिविटी, गोविन्द घाट – हेमकुण्ड, सुरकण्डा देवी रोप-वे।

जमरानी बांध परियोजना को केन्द्रीय कैबिनेट की आर्थिक मामलों की कमेटी ने दी मंजूरी।

ग्लोबल इन्वेस्टर समिट 2023 के लिये अब तक 1.24 लाख करोड़ रुपये से अधिक के एमओयू।

एस.जी.एस.टी. संग्रह में 33 प्रतिशत वृद्धि, राज्य की प्रति व्यक्ति आय में 12 प्रतिशत से अधिक वृद्धि।

राजकीय विद्यालयों के साथ राजकीय सहायता प्राप्त (अशासकीय) विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक के छात्र-छात्राओं को निशुल्क पाठ्य पुस्तकें।

- देश का सबसे कठोर नकल विरोधी कानून।
- लखपति दीदी योजना के तहत 1.25 लाख महिलाओं को लखपति बनाने का लक्ष्य।
- पलायन रोकने तथा रिवर्स पलायन को बढ़ावा देने हेतु "मुख्यमंत्री सीमान्त क्षेत्र विकास योजना"।
- मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना व मुख्यमंत्री आंचल अमृत योजना।
- मिशन दालचीनी, मिशन तिमरू, एरोमा पार्क व एरोमा वैली।
- राज्य में शहीद सैनिकों के परिवारों के एक सदस्य को रोजगार तथा विशिष्ट सेवा मेडल अवार्ड राशि में बढ़ोत्तरी।
- राज्य की महिलाओं को सरकारी नौकरी में 30 प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण।
- दीनदयाल उपाध्याय सहकारिता किसान कल्याण योजना के अन्तर्गत किसानों को 3 लाख और स्वयं सहायता समूहों को ₹ 5 लाख तक की धनराशि का ब्याज रहित ऋण।
- स्टेट मिलेट मिशन में स्थानीय कृषकों से झंगोरा, मंडुवा, सोयाबीन एवं चौलाई का उचित मूल्य पर क्रय।
- हॉर्टिकल्चर को बढ़ावा देने के लिए 50 हजार पॉलीहाउस का बजट प्रावधान।
- राज्य के युवाओं के लिए "विदेश रोजगार प्रकोष्ठ का गठन"।
- समान नागरिक संहिता के लिये प्रभावी पहल।
- अटल आयुष्मान योजना में 5 लाख रुपये तक का निशुल्क इलाज।
- राज्य में निर्धन परिवारों को वर्ष में 3 सिलेन्डर नि:शुल्क रीफिल की सुविधा।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

DESTINATION UTTARAKHAND
GLOBAL INVESTORS SUMMIT 2023
December, 2023 Dehradun (Uttarakhand) Peace To Prosperity

उत्तराखण्ड शासन

G20 भारत 2023 INDIA वसुधैव कुटुम्बकम् ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संकल्प नये उत्तराखण्ड का

राज्य स्थापना दिवस 9 नवम्बर की

माननीय प्रधानमंत्री जी ने 21वीं सदी के तीसरे दशक को उत्तराखण्ड का दशक कहा है। हम प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरूप राज्य को हर क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाने के लिये विकल्प रहित संकल्प के साथ काम कर रहे हैं।

पुष्कर सिंह धामी मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

हार्दिक शुभकामनाएं

21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हर संभव प्रयास। आज उत्तराखण्ड, इन दोनों ही स्तंभों को लगातार मजबूत कर रहा है।
ये दशक उत्तराखण्ड का दशक होगा

नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री

केदारनाथ बदरीनाथ धाम में 1300 करोड़ रुपये के पुनर्निर्माण/पुनर्विकास कार्य, चारधाम यात्रा के दौरान रिकॉर्ड 55 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किये दर्शन।

मानस खण्ड मंदिर माला मिशन।

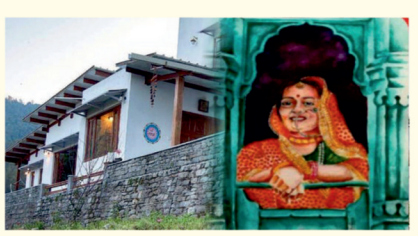

4000 से अधिक होम-स्टे विकसित, 16 ईको टूरिज्म डेस्टिनेशन का विकास।

मुख्यमंत्री सशक्त बहना उत्सव योजना के तहत महिला समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों को प्रोत्साहन।

पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा उत्तराखण्ड को बेस्ट एडवेंचर टूरिज्म डेस्टिनेशन का अवार्ड।

रेल कनेक्टिविटी : ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना, वन्दे भारत एक्सप्रेस ट्रेन, टनकपुर बागेश्वर रेल लाईन।

रोड कनेक्टिविटी : चारधाम ऑल वेदर रोड, दिल्ली-देहरादून एलिवेटेड रोड व अन्य राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास।

रोप-वे कनेक्टिविटी : पर्वतमाला परियोजना, गौरीकुण्ड-केदारनाथ रोप-वे कनेक्टिविटी, गोविन्द घाट – हेमकुण्ड, सुरकण्डा देवी रोप-वे।

जमरानी बांध परियोजना को केन्द्रीय कैबिनेट की आर्थिक मामलों की कमेटी ने दी मंजूरी।

ग्लोबल इन्वेस्टर समिट 2023 के लिये अब तक 1.24 लाख करोड़ रुपये से अधिक के एमओयू।

एस.जी.एस.टी. संग्रह में 33 प्रतिशत वृद्धि, राज्य की प्रति व्यक्ति आय में 12 प्रतिशत से अधिक वृद्धि।

राजकीय विद्यालयों के साथ राजकीय सहायता प्राप्त (अशासकीय) विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक के छात्र-छात्राओं को निशुल्क पाठ्य पुस्तकें।

- देश का सबसे कठोर नकल विरोधी कानून।
- लखपति दीदी योजना के तहत 1.25 लाख महिलाओं को लखपति बनाने का लक्ष्य।
- पलायन रोकने तथा रिवर्स पलायन को बढ़ावा देने हेतु "मुख्यमंत्री सीमान्त क्षेत्र विकास योजना"।
- मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना व मुख्यमंत्री आंचल अमृत योजना।
- मिशन दालचीनी, मिशन तिमरू, एरोमा पार्क व एरोमा वैली।
- राज्य में शहीद सैनिकों के परिवारों के एक सदस्य को रोजगार तथा विशिष्ट सेवा मेडल अवार्ड राशि में बढ़ोत्तरी।
- राज्य की महिलाओं को सरकारी नौकरी में 30 प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण।
- दीनदयाल उपाध्याय सहकारिता किसान कल्याण योजना के अन्तर्गत किसानों को 3 लाख और स्वयं सहायता समूहों को ₹ 5 लाख तक की धनराशि का ब्याज रहित ऋण।
- स्टेट मिलेट मिशन में स्थानीय कृषकों से झंगोरा, मंडुवा, सोयाबीन एवं चौलाई का उचित मूल्य पर क्रय।
- हॉर्टिकल्चर को बढ़ावा देने के लिए 50 हजार पॉलीहाउस का बजट प्रावधान।
- राज्य के युवाओं के लिए "विदेश रोजगार प्रकोष्ठ का गठन"।
- समान नागरिक संहिता के लिये प्रभावी पहल।
- अटल आयुष्मान योजना में 5 लाख रुपये तक का निशुल्क इलाज।
- राज्य में निर्धन परिवारों को वर्ष में 3 सिलेन्डर नि:शुल्क रीफिल की सुविधा।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट से धामी खींच सकते हैं बड़ी लकीर

एम. फहीम 'तन्हा'
न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून।ग्लोबल इन्वेर्सटर्स समिट 2023 के पूरे होने तक उत्तराखंड में बाहरी निवेश 2.5 लाख करोड़ के जादुई आंकड़े को छू सकता है। इसकी उम्मीद उन संकेतों से बंध रही है जो अभी तक के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के देश और विदेशों में हुए रोड शो के दौरान निवेश के एमओयू हुए हैं। राज्य में विभिन्न सेक्टर में निवेश के ये करार करीब 1.24 लाख करोड़ से अधिक के हो चुके हैं, जबकि अभी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट से पहले ही मुख्यमंत्री धामी राज्य में औद्योगिक समूहों को निवेश के लिए प्रोत्साहित करने के लिए रोड शो ही कर रहे हैं। मुख्यमंत्री इन नतीजों को लेकर उत्साहित हैं।

पूरा हो सकता है 2.5 लाख करोड़ का जादुई आंकड़ा

सूचना विभाग के महानिदेशक बंशीधर तिवारी कहते हैं कि देश के विभिन्न हिस्सों में अब तक हुए रोड शो में सबसे ज्यादा निवेश के एमओयू मुंबई में हुए हैं। कहा कि अब तक प्रदेश सरकार द्वारा जिन निवेशकों से इन्वेस्टमेंट एमओयू साइन किए गए हैं उनमें प्रमुखतः टूरिज्म हॉस्पिटैलिटी सेक्टर, आयुष वेलनेस सेक्टर, मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर, फार्मा सेक्टर, फूड प्रोसेसिंग, रियल एस्टेट-इंफ्रा, पंप्ड स्टोरेज सेक्टर, ग्रीन एंड रिन्यूएबल एनर्जी एवं ऑटोमोबाइल सेक्टर शामिल हैं।

जानिए कहां और कितने निवेश के हुए करार

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में अब तक देश से बाहर लंदन, बर्मिंघम, अबुधाबी, दुबई में 4 इंटरनेशनल रोड शो हो चुके हैं जबकि देशभर में प्रदेश सरकार दिल्ली, चेन्नई, बेंगलुरु, अहमदाबाद और मुंबई में रोड शो कर चुकी है। बीते 14 सितंबर और 4 अक्टूबर को धामी सरकार दिल्ली में ₹26575 करोड़, 26 और 27 सितंबर को ब्रिटेन में 12500 करोड़, 17 और 18 अक्टूबर को यूएई में 15475 करोड़ के निवेश का करार कर चुकी है। इसके अलावा 26 अक्टूबर को चेन्नई में 10150 करोड़, 28 अक्टूबर को बेंगलुरु में 4600 करोड़ और 1 नवंबर को अहमदाबाद में 24000 करोड़ के निवेश प्रस्ताव का करार हुआ है। अब मुंबई रोड शो में 30200 करोड़ रुपए के एमओयू किए गए हैं।

> उत्तराखंड में निवेश को लेकर जिस प्रकार से औद्योगिक समूह आकर्षित हो रहे हैं, उससे अनुमान है कि अकेले महाराष्ट्र-मुंबई से ही एक लाख करोड़ से ज्यादा के निवेश के एमओयू हो सकते हैं। इसके अलावा देश के अन्य राज्यों और विदेशों के निवेश अलग हैं। मुख्यमंत्री का विजन रंग ला रहा है, हम उत्साहित हैं।
>
> **-बंशीधर तिवारी, सूचना महानिदेशक**

दिवाली पर कहीं हेल्थ प्रॉब्लम न बन जाये तनाव का कारण !

- समय पर हेल्दी फूड खाएं
- जीवनशैली में बदलाव दिल के लिए खतरा है
- खाली पेट न करें अल्कोहल का सेवन

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 नवंबर , हम सभी को दिवाली का इंतजार है। इन दिनों लोग एक दूसरे से मिलते जुलते हें और मिठाई, स्नैक्स और पेय पदार्थों के सेवन का सिलसिला चलता रहता है। जिन्हें हम चाहते हुए भी इग्नोर नहीं कर पाते। लेकिन हम सभी को सावधान रहने की जरूरत है। क्योंकि खानपान की ये आदतें आपको कई बीमारियों का शिकार बना सकती हैं। भोपाल के इंपल्स मल्टीकेयर हॉस्पिटल के डायरेक्टर और फिजिशियन डॉ. आरीफ खान कहते हैं कि दीपावली खुशियों का त्योहार है। इस दौरान कोई भी लापरवाही स्वास्थ्य पर भारी पड़ सकती है। इन दिनों मार्केट में मिलने वाले सभी फूड प्रोडक्ट्स में मिलावट बढ़ जाती है। जिससे फूड पॉइजनिंग का खतरा बढ़ता है। कार्डियक और डाइजेशन से जुड़ी समस्याएं भी इन दिनों बेहद कॉमन हैं। इसलिए इस समय खाद्य पदार्थों को खरीदने के दौरान सतर्क रहें, अच्छा खाएं, भरपूर

नींद लें, खुद को हाइड्रेटेड रखें और वॉक करना न भूलें। आइए जानते हैं दिवाली पर बदली हुई लाइफस्टाल कैसे आपकी सेहत को नुकसान पहुंचाती है।

पेट से जुड़ी समस्याएं :

दिवाली खूब सारी मिठाइयों और स्वादिष्ट व्यंजनों का त्योहार है। इन्हें वक्त बेवक्त खाना और अनहेल्दी खाते रहना गेस्ट्रोइंटेस्टनाइनल प्रॉब्लम की वजह बन सकता है। इन दिनों बाहर का खाना तो पूरी तरह से अवॉइड करना चाहिए। वरना उल्टी, सूजन और फूड पॉइजनिंग हो सकती है। कई बार त्यौहार में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि खाने पीने का भी ध्यान नहीं रहता, ऐसे में हाइपर-एसिडिटी के कारण सिरदर्द की संभावना रहती है।

नींद की कमी :

त्योहारों में देर रात तक जागना, बात करना, नाचना और पार्टीज करना बहुत कॉमन है। कोई संदेह नहीं है कि इससे हमारी स्लीपिंग साइकिल डिस्टर्ब होती है। बता दें कि अनियमित नींद आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है और मूड को भी खराब कर देती है।

फेस्टिव हार्ट सिंड्रोम

इन दिनों लोग तमाम तरह के कामों में व्यस्त होते हैं। जिन लोगों के पास समय का अभाव है, उन्हें एक ही समय में ढेरों काम निपटाने होते हैं। दिमाग पर एक्स्ट्रा प्रेशर दिल को खतरे में डाल सकता है। ऐसे में अगर आप डीप फ्राई वाले फूड आइटम खा लें, तो अटैक पड़ने की संभावना बढ़ जाती है। इस स्थिति को फेस्टिव हार्ट सिंड्रोम के नाम से जाना जाता है। जिससे हम सभी को बचना चाहिए।

हाई ब्लड प्रेशर

शौकिया तौर पर स्मोकिंग और अल्कोहल लेने वाले लोगों को ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। इन चीजों का ओवर कंजप्शन इनके लिए खतरनाक है। अगर लेते भी हैं, तो इन्हें कभी भी खाली पेट नहीं लेना चाहिए, इससे ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर में उतार-चढ़ाव होता है। अगर आप डायबिटीज और हाई ब्लड प्रेशर के मरीज हैं, तो आपको किसी भी कीमत पर शराब को अवॉइड करना चाहिए।

पर्यावरण का ध्यान रखें पटाखों पर कोई प्रतिबंध नहीं : सुप्रीम कोर्ट

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 नवंबर , सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को राजस्थान और अन्य राज्यों को त्योहारी सीजन के दौरान पटाखों से संबंधित अपने पहले के आदेश का पालन करने का निर्देश दिया और कहा कि प्रदूषण का प्रबंधन करना सभी का कर्तव्य है। न्यायमूर्ति एएस बोपन्ना और न्यायमूर्ति एमएम सुंदरेश की पीठ ने राजस्थान को विशेषकर त्योहारी सीजन के दौरान वायु प्रदूषण को कम करने के लिए कदम उठाने का निर्देश दिया। दरअसल, सर्वोच्च अदालत राजस्थान में पटाखों के मुद्दे से संबंधित एक आवेदन पर सुनवाई कर रही थी। एक वकील ने अदालत से पहले के आदेशों का पालन करने के लिए निर्देश जारी करने का आग्रह किया।

वकील ने कोर्ट को बताया कि कोर्ट का पिछला आदेश दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र पर लागू था। वकील ने पूरे भारत में पटाखों पर प्रतिबंध लगाने की मांग की। कोर्ट ने कहा कि यह गलत धारणा है कि पर्यावरण के मुद्दे पर कोर्ट की जिम्मेदारी है। कोर्ट ने टिप्पणी की कि प्रदूषण का प्रबंधन करना हर किसी का कर्तव्य है। कोर्ट ने टिप्पणी की कि हर नागरिक को यह देखना होगा कि दिवाली कम पटाखों के साथ पर्यावरण अनुकूल मनाई जाए।

अदालत ने अपनी टिप्पणी यह भी साझा की कि इन दिनों स्कूली बच्चों की तुलना में बुजुर्ग अधिक पटाखे फोड़ते हैं। अदालत ने राजस्थान राज्य को उदयपुर में प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए तत्काल कदम उठाने का भी निर्देश दिया। इस बीच, एक अन्य वकील ने अदालत को दूसरे आवेदन के बारे में अवगत कराया जो पराली जलाने से संबंधित है। कोर्ट ने मौसम विभाग से दो हफ्ते में जवाब दाखिल करने को कहा है।

अदालत ने यह भी टिप्पणी की कि उन्हें लगता है कि इस मुद्दे को लेकर आरोप-प्रत्यारोप का खेल चल रहा है। इससे पहले शीर्ष अदालत ने 22 सितंबर को बेरियम रसायन युक्त पटाखों के निर्माण, बिक्री और उपयोग की मांग वाली याचिका खारिज कर दी थी। इस बीच, उसने राष्ट्रीय राजधानी में पटाखों के इस्तेमाल पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के दिल्ली सरकार के फैसले में हस्तक्षेप करने से भी इनकार कर दिया।

शीर्ष अदालत पटाखों से जुड़े मुद्दे पर सुनवाई कर रही थी। इनमें से एक याचिका भाजपा नेता मनोज तिवारी ने 2022 में दिल्ली में दिवाली समारोह के दौरान पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध को चुनौती देते हुए दायर की थी। 2021 में, सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि पटाखों के उपयोग पर कोई पूर्ण प्रतिबंध नहीं है और केवल वे आतिशबाजी प्रतिबंधित हैं जिनमें बेरियम लवण होते हैं।

सिल्वर तलाक़ क्यों हो रहा है भारत में पॉपुलर ?

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 नवंबर , भारतीय संस्कृति में विवाह कई जन्मों का बंधन होता है और डिवोर्स जो कि अंग्रेजी शब्द है उसकी हिंदी डिक्शनरी में खोजने पर कोई अर्थ नहीं मिलता। लेकिन हैरान करने वाली बात सामने आयी है कि इन दिनों भारत में डिवोर्स यानी तलाक की दर काफी तेजी से बढ़ी है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट रविश्व की महिलाओं की प्रगति 2019-2020₹ कहती है कि पिछले दो दशकों में भारत में तलाक़ की दर दोगुनी हो गई है।

आपको जानकर हैरत होगी की तलाक भी कई तरह के होते हैं। इन कई तरह के तलाक में से जो तलाक का प्रकार आजकल बहुत ट्रेंड कर रहा है वो है सिल्वर डिवोर्स। पिछले कुछ वर्षो में सिल्वर डिवोर्स काफी पॉपुलर हुआ है और काफी चर्चा में भी है। होता क्या है सिल्वर डिवोर्स? आइये जानते हैं। क्या है सिल्वर तलाक़? सिल्वर तलाक 50 वर्ष से अधिक उम्र के दो लोगों के बीच का तलाक है। सामाजिक मानदंड बदल रहे हैं, और अन्य कारणों के अलावा महिलाएं तेजी से स्वतंत्र हो रही हैं। आमतौर पर वे कपल जिनकी उम्र जो 50 या 60 वर्ष से अधिक हो जाती है उनमें सिल्वर डिवोर्स के मामले देखने को मिलते हैं। इस उम्र में प्रायः बाल सफ़ेद होने लगते हैं इसलिए इस तलाक को सिल्वर डिवोर्स कहते हैं। बदलते वक़्त के साथ लोगों की सोच भी काफी तेजी से बदल रही है। सूचना और सोशल मीडिया के इस युग में किसी भी प्रकार की जानकारी हासिल करना बहुत आसान हो गया है। ऐसे में लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रहे हैं और फिर निर्णय ले रहे हैं। लम्बे समय से एकसाथ रहने वाले कपल अब अलग रहना चाहते हैं। बंदिशों को दरकिनार कर आज़ाद जीना चाहते हैं। दूसरो के लिए नहीं, उम्र के इस पड़ाव पर अपने लिए जीना चाहते हैं। ऐसे में इन्हे लगता है की 50 या 60 वर्ष की उम्र में अब आत्मनिर्भर होकर जिया जाए।

रुद्राक्ष से कैंसर के उपचार की जगी उम्मीद...

■ शोध में क्या सफलता मिली? पढ़िए पूरी रिपोर्ट

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट 09 नवंबर। शोभित विश्वविद्यालय मेरठ उत्तर प्रदेश में डॉ. शिवा शर्मा, डॉ. मनीषा शर्मा और शोधार्थी मिलिन सागर और प्रशांत पांडेय ने रुद्राक्ष पर शोध किया है। शोध में रुद्राक्ष का कैंसर के उपचार में प्रयोग को लेकर काफी सकारात्मक परिणाम आए हैं। अब रुद्र के अश्रु से बना रुद्राक्ष कैंसर के उपचार में भी सहायक बनेगा। इसके लिए चूहों पर किए गए ट्रायल में सफलता भी मिल चुकी है। इंसानों पर ट्रायल के लिए शोभित विवि के शोधार्थियों की बीएचयू के साथ अनुबंध की तैयारी है।

शोधार्थियों का दावा है रुद्राक्ष में इलेक्ट्रो मैग्नेटिक एनर्जी के साथ फाइटो कैमिकल्स (एल्केलॉइड, फिनोलिक व फ्लेवेनोइड्स) भी हैं। फाइटो कैमिकल्स का असर कीमोथैरेपी (सिस्प्लैटिन) की तरह होता है। कीमोथैरेपी के कई साइड इफेक्ट हैं, लेकिन रुद्राक्ष के फाइटो कैमिकल्स का कोई साइड इफेक्ट नहीं हैं।डॉ. शिवा शर्मा ने बताया कि रुद्राक्ष न सिर्फ धारण करने पर बल्कि दवा के रूप में भी उम्मीद से

ज्यादा लाभकारी है। 26 तथ्यों से युक्त रुद्राक्ष की इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड इंसान की बायो इलेक्ट्रोसिटी के संपर्क में आने से हीलींग थेरेपी का काम करती है। इससे रक्तचाप, तनाव आदि से राहत मिलती हैं। इसमें कई लाभकारी फाइटो कैमिकल्स भी हैं। एक्लेलॉइड, फिनोलिक व फ्लेवेनोइड्स फाइटो कैमिकल्स का अतुलनीय संतुलन हैं। यह कैंसर के रोगी के लिए रामबाण हैं। रुद्राक्ष के फाइटो कैमिकल्स की क्षमता और प्रभाव कीमोथैरेपी (सिस्प्लैटिन) जैसा हैं। कीमोथैरेपी कराने से बाल झड़ना, भूख-प्यास न लगना। बेचैनी, घबराहट जैसे कई साइड इफेक्ट होते हैं। रुद्राक्ष के फाइटो कैमिकल्स से कोई साइट इफेक्ट नहीं होता है।

10 चूहों पर परीक्षण हुआ सफल

रुद्राक्ष के फाइटो कैमिकल्स का परीक्षण दस कैंसर पीड़ित चूहों पर हुआ है। डॉ. शिवा ने बताया कैंसर से गंभीर पीड़ित चूहों को दिन में तीन बार फाइटो कैमिकल्स से बनी दवा की डोज दी गई। 15-15 दिन में उनके स्वास्थ्य का परीक्षण किया गया। इस दौरान चूहों की भूख-प्यास कतई प्रभावित नहीं हुई। लीवर, किडनी के अलावा हाजमा भी सही रहा। कुछ समय बाद जब परीक्षण किया तो परिणाम हैरान करने वाला निकला। अधिकांश चूहों को कैंसर से मुक्ति मिल गई।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस ने भी सराहा

बंगलौर में हुई इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (आईआईएससी) की सेमिनार में रुद्राक्ष से बनी दवा के शोध को काफी सराहा गया है। सेमिनार में प्रशांत पांडेय ने अपना प्रजेंटेशन देते हुए बताया कि रुद्रांक्ष से बनी दवा का कैंसर पीड़ित चूहों पर काफी अच्छा रिजल्ट आया है, तो उसे बेस्ट रिसर्च बताया गया।

अब इंसानों पर ट्रायल की तैयारी

चूहों पर रुद्राक्ष से बनी दवा का ट्रायल सफल होने के बाद अब इंसान पर ट्रायल की तैयारी है। बीएचयू के आयुर्वेदिक अस्पताल में आने वाले कैंसर रोगियों पर ट्रायल किया जाएगा। इसके लिए एमओयू की प्रक्रिया चल रही हैं।

भारत के किस गांव में सबसे पहले होता है सूर्योदय

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 नवंबर , भारत जैसा अनोखा देश शायद ही आपको पूरी दुनिया में कहीं और देखने को मिलेगा. इस देश की खासियत ये है कि यहां पर आपको अलग-अलग जगहों पर अलग खान-पान, लोग, बोली, भाषाएं और मौसम देखने को मिलेंगे. यही नहीं, सूर्य उगने और ढलने तक के वक्त में बहुत फर्क होता है. पर क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर भारत में सबसे पहले सूरज कहां उगता होगा? राज्य का नाम शायद लोग जानते होंगे, पर उस गांव का नाम 99 फीसदी लोगों को नहीं पता होगा, जहां सबसे पहले सूर्योदय होता है.हम आपके लिए लाते हैं देश-दुनिया से जुड़ी ऐसी रोचक जानकारियां जो शायद ही किसी को पता होंगी. आज हम बात कर रहे हैं भारत के उस गांव के बारे में, जहां सबसे पहले सूर्योदय होता है. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कुछ वक्त पहले किसी ने ये सवाल किया- "भारत में सबसे पहले सूरज कहां निकलता है?" चलिए देखते हैं सबसे पहले कि लोगों ने इसका क्या उत्तर दिया.

लोगों ने क्या दिया जवाब?

शमवील नाम के एक यूजर ने कहा- "1999 में अरुणाचल प्रदेश स्थित डोंग नामक जगह की खोज की गई, तो पता चला कि देश में सबसे पहले सूर्योदय यहीं

होता है." रजनी कांत नाम के यूजर ने कहा- "अरुणाचल प्रदेश में निकलता है अरुण मतलब सूरज." एक यूजर ने कहा- "अरुणाचल प्रदेश, और इसी लिए इसे अरुणाचल यानी सूर्य का आंचल माना जाता है."

गांव में 4 बजे हो जाता है सूर्यास्त

अब ये तो लोगों को जवाब हो गए जो सही भी हैं. भारत में सबसे पहले सूर्योदय अरुणाचल प्रदेश में होता है. पर हमारा सवाल है कि वो कौन सा गांव है, जहां सबसे पहले सूर्य उदय होते दिखाई देता है. चलिए आपको इसका जवाब बताते हैं. अरुणाचल प्रदेश में डोंग घाटी है, यहां एक गांव है, जिसका नाम है डोंग. इस डोंग गांव में ही सबसे पहले सूर्योदय होता दिखाई देता है. आपको जानकर हैरानी होगी कि सुबह 4 बजे के करीब यहां सूर्योदय हो जाता है और शाम के 4 बजे तक सूर्यास्त होने लगता है. ये गांव धरती से करीब 1240 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है.

संपादकीय

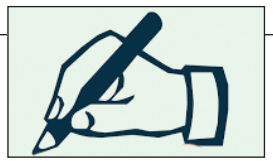

'डीपफेक' के भयानक खतरे

फिल्म अभिनेत्रियों रश्मिका मंधाना औा कैटरीना कैफ के 'डीपफेक' वीडियो बनाकर दुनिया भर में जिस तरह प्रसारित किए गए, उससे लगता है कि हम, मनुष्य, कितने असहाय और असुरक्षित हैं। कृत्रिम बौद्धिकता किस तरह हमें छल सकती है और अपना शिकार बना सकती है। इस प्रौद्योगिकी पर विश्व इतरा रहा है और सार्वजनिक इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है। मनुष्य अहंकार में है कि उसने एक और मानव-जाति की रचना कर ली है। वह नहीं जानता कि यह मानवता के लिए कितना खौफनाक खतरा है, संकट है! 'डीपफेक' बनाना मुश्किल नहीं है। उसके रचयिता चेहरे और आवाज की नकल करने में सक्षम हैं। यह किसी की भी गरिमा, पहचान और स्वायत्तता का ही संकट नहीं है, बल्कि इस धोखाधड़ी से राष्ट्रीय विद्रोह पनप सकता है। दो देशों के संबंधों में तनाव फैल सकता है। सांप्रदायिक दंगे फैल सकते हैं। अफवाहें एक सच बनकर समाज और देश में व्याप्त हो सकती हैं और उनके फलितार्थ कितने भी भयानक हो सकते हैं। धोखा और दुष्प्रचार एक लोकतंत्र को पलट भी सकते हैं। वित्तीय फ्रॉड किए जा सकते हैं। कुल मिलाकर राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवता के लिए गंभीर संकट पैदा हो सकते हैं। दरअसल हमें आसान और बनी-बनाई जिंदगी की आदत पड़ गई है। आखिर कृत्रिम बौद्धिकता की जरूरत ही क्या है? जब यह नहीं थी, तो क्या नए आविष्कार नहीं किए गए? क्या मनुष्य अंतरिक्ष में नहीं गया? क्या नए और सशक्त साहित्य की रचना नहीं की गई? हम स्वावलंबी थे, तो क्या हमारी हड्डियां, बाहें-टांगें टूट गई थीं? आज इतने पराश्रित क्यों हो रहे हैं हम? क्योंकि हम आलसी होते जा रहे हैं। उसी का गलत फायदा 'डीपफेक' जैसी प्रौद्योगिकी उठा रही है। जिसकी रचना ही 'कृत्रिम' है, वह एक जीते-जागते मनुष्य का विकल्प कैसे हो सकती है? 'डीपफेक' ने यहां तक साजिश रची थी कि यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की को 'नकली' बनाया और सेनाओं को आदेश दिया कि वे रूसी सेनाओं के सामने आत्म-समर्पण कर दें। इस आदेश से यूक्रेनी सेना में अपने ही राष्ट्रपति के प्रति असंतोष भडक़ उठा। वक्त रहते असलियत समझ में आई और हालात पर काबू पा लिया गया। अलबत्ता 'डीपफेक' ने तो अराजकता और विद्रोह के बीज बो ही दिए थे। ब्रिटेन की एक ऊर्जा कंपनी के मुखिया नकद पैसा भेजने की धोखाधड़ी के शिकार हो गए, क्योंकि कंपनी के जर्मन सीईओ ने फोन किया था। दरअसल वह फोन कॉल ही 'डीपफेक' थी और आवाज नकली बना कर फोन किया गया था। बहरहाल अब भारत में भी नकलीपन की यह बीमारी जड़ें फैला चुकी है, लेकिन हमारे देश में कड़ी सजा की कोई कानूनी धारा नहीं है। अलबत्ता सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने निर्देश दिए हैं कि सोशल मीडिया और इंटरनेट कंपनियां, जिनमें आईटी मध्यस्थ कंपनियां भी शामिल हैं, रूल 3(2)(बी) के तहत किसी भी फर्जी वीडियो और पोस्ट को शिकायत के 24 घंटे के भीतर ही हटाएं अथवा उस तक किसी की पहुंच संभव न हो सके। मंत्रालय ने यह भी घोषणा की है कि 'डीपफेक' के दोषियों को 3 साल की अधिकतम जेल और एक लाख रुपए का आर्थिक दंड भुगतना पड़ेगा। यह अधिकतम सजा है, जिसे न्यायाधीश कम करके भी सुना सकते हैं। सवाल यह है कि एक बार किसी का 'डीपफेक' वीडियो सार्वजनिक हो गया, तो वह अल्पकाल में ही करोड़ों लोगों तक पहुंच सकता है। उसकी निजता, गरिमा, पहचान को नुकसान हो जाएगा।

दैनिक न्यूज़ वायरस

संपादक : मौ.सलीम सैफी, **कार्यकारी संपादक :** आशीष कुमार तिवारी न्यूज़ वायरस नेटवर्क प्रा. लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मौ.सलीम सैफी द्वारा विश्वनाथ प्रिंटर्स, अजबपुर कलां, देहरादून से प्रकाशित एवं न्यूज़ वायरस नेटवर्क प्रा. लिमिटेड, 48/3 बलबीर रोड, डालनवाला, देहरादून से मुद्रित। **फ़ोन :** 0135-4066790, 2672002, **RNI No. :** UT-THIN/2012/44094
Cert. Ser. No. : 31406 **E-mail :** dainiknewsvirus@gmail.com
Website : www.newsvirusnetwork.com **YouTube :** TV News Virus
न्याय क्षेत्राधिकार : जनपद देहरादून (उत्तराखंड), भारत

उत्तराखंड के रोचक स्कूल की कहानी

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 नवंबर , 2012 से 2014 तक स्कूल के काम के लिए कमलेश छुट्टियों में या छुट्टी लेकर नानकमत्ता आते थे। एक बार जब उन्होंने 2015 में अपनी पीएचडी पूरी कर ली तो शिक्षक बनने के अपने सपने को संजोने और स्कूल को नए तरीके से फिर से डिजाइन करने के लिए वह गांव आ गए। आज वह सिर्फ शिक्षक नहीं हैं, बल्कि छात्रों के साथ-साथ खुद भी सीखते हैं। उत्तराखंड के उधम सिंह नगर जिले में नानकमत्ता पब्लिक स्कूल के छात्रों ने अलग-अलग क्षेत्रों में 20 से ज्यादा सामुदायिक केंद्र स्थापित किए हैं। इनका फोकस उन छात्रों को सीखने की जगह प्रदान करना है जो शिक्षा का खर्च वहन नहीं कर सकते।

ऐक्टविटीज को कयिा जाता है प्रमोटइन सेंटरों में छात्र पुस्तक और विज्ञान मेलों का आयोजन करते हैं। खेल, संगीत, फिल्मों और किताबों के जरिये शिक्षण और प्रबंधन के बारे में सीखते हैं। स्कूल में 1,000 से ज्यादा छात्र हैं। इन प्रोजेक्टों में ज्यादातर 9 से 12वीं तक के सीनियर स्टूडेंट होते हैं। कमलेश का लक्ष्य ग्रामीण और अर्ध-ग्रामीण बच्चों को समग्र शिक्षा प्रदान करना है। यह एक स्टूडेंट लीडरशिप वाला स्कूल है जहां छात्र ढेर सारी गतिविधियों के माध्यम से एक-दूसरे से सीखते हैं। स्कूल का करिकुलम फ्लेक्सिबल है। यह गांवों और अर्ध-ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों को आकर्षित करता है। वो यहां समय बिताना पसंद करते हैं।

इस विशेष स्कूल का आइडिया पिथौरागढ़ जिले के एक्टिविस्ट महेश चंद्र पुनेठा ने दयिा था। शुरू में फोकस सिर्फ किताबें उपलब्ध कराने पर था। लेकिन, बाद में यह एक ऐसे स्थान के रूप में विकसित हुआ जहां समुदाय के बच्चे एक-दूसरे से सीख सकते थे। एनपीएस छात्रों को फील्ड रिसर्च करके फिल्म बनाने के लिए स्थान भी देता है। अब तक स्कूल ने छात्रों को अपने यूट्यूब चैनल पर दो डॉक्यूमेंट्री रिलीज करने में मदद की है। पहली, उत्तराखंड के गुज्जर समुदाय के बारे में है, जो आजीविका के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करते हैं। दूसरी, नानकमत्ता में मछुआरों के जीवन के बारे में है। ऐसी फिल्में बनाने के लिए छात्र इन समुदायों के साथ उनके रोजमर्रा के जीवन के बारे में अधिक जानने के लिए एक महीना बिताते हैं।

स्थानीय परिवेश में सिखाने की होती है कोशिश

स्कूल की कोशिश होती है कि छात्र स्थानीय परिवेश में सीखें। कमलेश महसूस करते हैं कि बच्चे जब इस तरह से सीखते हैं तो उनके लिए चीजों को जानना-समझना आसान हो जाता है। वे खुद को चीजों से कनेक्ट कर लेते हैं। जो चीजें क्लास की सेटिंग में सिखाई जाती हैं वो बहुत क्लासिकल होती हैं। उससे स्टूडेंट पारंपरिक कला, चुनौतियों, सामाजिक मुद्दों और रीति-रिवाजों पर फोकस नहीं कर पाते हैं।

शौचालय को क्यों कहते हैं रेस्ट रूम ?

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 नवंबर , जब कभी आप किसी हाईवे पर यात्रा करते होंगे, तो आपकी नजर रोड के किनारे बने शौचालयों पर पड़ती ही होगी. होटल जाते होंगे तो टॉयलेट का इस्तेमाल किया होगा, रेस्टोरेंट, पेट्रोल पंप आदि पर भी कभी न कभी आपने शौचालय का उपयोग किया होगा. इन सब जगहों पर कई बार आपने देखा होगा कि वहां टॉयलेट को रेस्टरूम लिखा जाता है, यानी आराम करने की जगह. हालांकि, ये आवश्यक नहीं है, पर विदेशों में तो ये काफी कॉमन है. क्या आपने कभी इसके कारण के बारे में सोचा है ? चलिए आपको बताते हैं. रोचक ज्ञान में आज हम बात कर रहे हैं कि टॉयलेट को रेस्टरूम क्यों कहा जाता है? दरअसल, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म कोरा पर हाल ही में किसी ने ये सवाल पूछा है जिसका जवाब कई लोगों ने दिया है. पर जवाब इतना भी आसान नहीं है क्योंकि सोचने वाली बात ये है कि अगर टॉयलेट में जाकर आराम नहीं किया जाता, तो फिर उसे क्यों रेस्टरूम कहते हैं.

सोशल मीडिया में लोगों ने क्या दिया जवाब

एलेक्स कैलेट नाम के शख्स ने कहा- "ये अमेरिकी शब्द है. ब्रिटेन में अगर रेस्टरूम लिखा होगा तो उसमें आर्मचेयर, कॉफी टेबल, जैसी चीजें स्टाफ के लिए होती हैं, जिसमें वो जाकर रेस्ट कर सकते हैं. अमेरिका में लोग टॉयलेट कहने पर परहेज करते हैं, वो रेस्टरूम ही कहते

हैं. वहीं ब्रिटेन में लोग सीधे टॉयलेट के लिए पूछते हैं." रविंद्र मिश्रा नाम के यूजर ने कहा- रेस्टरूम शब्द 20वीं सदी से इस्तेमाल होने लगा क्योंकि उस वक्त बाथरूम के अंदर सिर्फ टॉयलेट ही नहीं, बल्कि बैठने के लिए भी जगह बनाई जाती थी, जहां जाकर लोग फ्रेश हो सकते थे. कन्हैया मिश्रा नाम के यूजर ने कहा- "अमेरिका में रेस्टरूम कहा जाता है क्योंकि वहां का कॉन्सेप्ट ये है कि बाथरूमों को ऐसा बनाया जाता है कि उसमें जाकर लोग रिलैक्स कर सकें."

ये है रेस्टरूम कहने का कारण

होम डिजाइन इंस्टिट्यूट वेबसाइट की रिपोर्ट के अनुसार "रेस्टरूम" शब्द की उत्पत्ति 19वीं शताब्दी में हुई जब यात्रियों को उनकी यात्रा के दौरान आराम करने और खुद को तरोताजा करने के लिए जगह देने के लिए सार्वजनिक स्नानघर बनाए गए थे. उस समय, इन सार्वजनिक शौचालयों का उपयोग आमतौर पर नहाने और बुनियादी स्वच्छता के स्थान के रूप में किया जाता था. परिणामस्वरूप, "रेस्टरूम" शब्द को उस स्थान का वर्णन करने के लिए अपनाया गया जहां लोग आराम कर सकते थे और खुद को रीफ्रेश कर सकते थे. एक कारण ये भी है कि अब के बाथरूम सिर्फ टॉयलेट्स सीट्स से बने नहीं होते हैं, उसमें शावर भी होते है, चेंज करने की भी जगह होती है, और कई बार माताओं के लिए ब्रेस्टफीड करने के काम भी आ जाता है. इस वजह से उसे रेस्टरूम कह देते हैं.

‘मैं देवभूमि उत्तराखंड हूँ’

■ हिमालय की गोद में अद्भुत छटा बिखराए
■ चारों धाम यहीं पर गंगा, देवभूमि कहलाए

राज्य स्थापना दिवस पर विशेष लेख

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 9 नवंबर , उत्तराखंड उत्तर भारत में स्थित एक पर्वतीय राज्य है. इसे देवभूमि भी कहा जाता है. यह हिमालय पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित है. यह ऋषि मुनियों की भूमि के रूप में जाना जाता है. उत्तराखंड राज्य का गठन 9 नवंबर सन 2000 में उत्तरप्रदेश से अलग होकर हुआ इसका गठन भारत के सत्ताइसवें राज्य के रूप में किया गया था. गठन के समय राज्य का नाम उत्तरांचल रखा गया था. जनवरी 2007 में स्थानीय लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए राज्य का आधिकारिक नाम बदलकर उत्तराखण्ड कर दिया गया

गैरसैण के पहाड़ से निकल कर दिल्ली की संसद तक चले लम्बे संघर्ष , सड़कों पर आंदोलनों , आंदोलनकारियों की शहादतों के बाद मिला है उत्तराखण्ड जिसमें आज कुल 13 जिले हैं जो कुमाऊँ मण्डल और गढ़वाल मण्डल में विभक्त हैं. राज्य की सीमाएँ उत्तर में तिब्बत और पूर्व में नेपाल से लगी हैं. पश्चिम में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में उत्तर प्रदेश इसकी सीमा से लगे राज्य हैं पारम्परिक हिन्दू ग्रन्थों और प्राचीन साहित्य में इस क्षेत्र का उल्लेख उत्तराखण्ड के रूप में ही किया गया है. हिन्दी और संस्कृत में उत्तराखण्ड का अर्थ उत्तरी क्षेत्र या भाग होता है. राज्य की राजभाषा हिंदी और संस्कृत है

उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता

देवभूमि उत्तराखंड का प्राकृतिक सौंदर्य अत्यंत मनोरम और आकर्षक है. यह सौंदर्य ना केवल भारतीय अपितु विदेशों से भी पर्यटकों को खींच लाता है। उत्तराखंड राज्य में हिम से ढकी हुई पर्वत श्रृंखलाएं, हरे-भरे वन, वनों में रहने वाले दुर्लभ वन्य जीव देखने लायक हैं. उत्तराखंड राज्य में स्थित फूलों की घाटी तो अपनी सुंदरता के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है और इसे विश्व धरोहर की सूची में भी रखा गया है

धार्मिक दृष्टि से उत्तराखंड

धार्मिक दृष्टि से यह राज्य अत्यंत ही पवित्र राज्य माना जाता है. इस राज्य में अनेक मंदिर हैं. भगवान शिव का निवास स्थान कैलाश पर्वत भी यहीं स्थित है. हिमालय पर्वत भी उत्तराखंड राज्य में आता है. हिन्दू धर्म मे अति पवित्र मानी जानी वाली नदियां गंगा और यमुना का उद्गम इसी राज्य से हुआ है भारतीय धर्म एवं ग्रंथों के अनुसार चार धाम यमुनोत्री, गंगोत्री, बद्रीनाथ तथा केदारनाथ उत्तराखंड राज्य में ही स्थित हैं इसी के चलते उत्तराखंड को देवताओं की भूमि यानी देवभूमि कहते हैं. उत्तराखंड राज्य में 85 फीसदी हिन्दू धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं तथा बाकी अन्य सभी धर्म के लोग यहाँ रहते हैं

उत्तराखंड है पर्यटन का मुख्य केंद्र

उत्तराखंड राज्य धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण होने के साथ साथ पर्यटन का भी प्रमुख केंद्र है. उत्तराखंड राज्य में स्थित महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्यान जैसे जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान (रामनगर), फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान (नैनीताल) और नन्दा देवी राष्ट्रीय उद्यान (चमोली जिला) अपनी सुंदरता के कारण पूरे विश्व भर में प्रसिद्ध है उत्तराखंड राज्य में हरिद्वार, देवप्रयाग, यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ, गौरीकुंड, त्रिजुगीनारायण, टिहरी, ऋषिकेश, धरासू, तुंगनाथ, ताड़केश्वर मंदिर, उत्तरकाशी, लैंसडौन इत्यादि पर्यटन के मुख्य केंद्र हैं

असंतुष्ट पत्नियां हथियार की तरह कर रहीं 498A का इस्तेमाल

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 नवंबर , भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 498ए को लेकर झारखंड हाईकोर्ट ने एक अहम टिप्पणी की है. झारखंड हाईकोर्ट ने कहा कि असंतुष्ट पत्नियां भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 498ए का उपयोग ढाल के बजाय एक हथियार के रूप में कर रही हैं. बता दें कि अगर किसी शादीशुदा महिला पर उसके पति या उसके ससुराल वालों की ओर से किसी तरह की ‘क्रूरता’ की जा रही है तो आईपीसी की धारा 498A के तहत यह अपराध के दायरे में आता है. यानी यह धारा ससुराल वालों द्वारा शादीशुदा महिलाओं पर क्रूरता को अपराध मानती है.बार एंड बेंच की खबर के मुताबिक, हाईकोर्ट के जस्टिस संजय कुमार द्विवेदी ने कहा कि ऐसे मामले अक्सर पत्नियों द्वारा बिना उचित विचार-विमर्श के छोटी-मोटी बातों पर आवेश में आकर यानी हीट ऑफ मेमेंट में दायर किए जाते हैं.

उन्होंने कहा, ‘पति या उसके रिश्तेदारों के हाथों क्रूरता को दंडित करने के उद्देश्य से भारतीय दंड संहिता की धारा 498-ए को कानून में शामिल किया गया था. हाल के वर्षों में वैवाहिक विवादों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है और ऐसा लगता है कई मामलों में भारतीय दंड संहिता की धारा 498-ए का दुरुपयोग किया जा रहा है और असंतुष्ट पत्नियों द्वारा धारा 498-ए को ढाल के बजाय हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है.हाईकोर्ट ने आगे कहा कि छोटी-मोटी वैवाहिक झगड़ें अक्सर गंभीर रूप धारण कर लेती

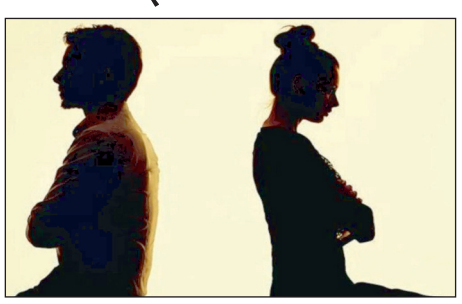

हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि जघन्य अपराध होते हैं, जिसमें पत्नियों द्वारा ससुराल पक्ष के लोगों को झूठा फंसाया जाता है. दरअसल, हाईकोर्ट के समक्ष याचिकाकर्ताओं (शिकायतकर्ता के ससुराल वालों) का मामला था कि उनके खिलाफ यातना का आरोप लगाने वाली दायर की गई शिकायत झूठी है, क्योंकि वे उस समय यात्रा कर रहे थे. कोर्ट ने माना कि याचिकाकर्ता हैदराबाद में रहते हैं, जबकि कथित घटना धनबाद में हुई थी.हाईकोर्ट ने यह भी पाया कि मामले में याचिकाकर्ताओं की भूमिका का खुलासा नहीं किया गया था और उनके खिलाफ आरोप केवल सामान्य और अस्पष्ट थे. कोर्ट ने आईपीसी की धारा 498ए के तहत निराधार मामले दर्ज करने पर निराशा व्यक्त की और याचिकाकर्ताओं को राहत दे दी और इसके साथ ही उनके खिलाफ आपराधिक कार्यवाही को खारिज कर दिया.

बच्चों को शांत करने के लिए मोबाइल थमाना नुकसानदेह : रिसर्च

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट 09 नवंबर : कई बार बच्चे रोते हैं तो पैरेंट्स उन्हें मोबाइल या टैबलेट देकर शांत करा देते हैं। इससे बच्चे उस वक्त तो शांत हो जाते हैं, लेकिन भविष्य में इसके गंभीर परिणाम सामने आते हैं। दरअसल, 9 साल की उम्र पूरी होने के बाद इस तरह के बच्चे जब दूसरे बच्चों के संपर्क बनाते हैं, तो डिवाइस की लत के चलते उन्हें घुलने-मिलने में दिक्कत होती है।

उनकी एकाग्रता घटती है और कार्य करने की क्षमता प्रभावित होती है। स्क्रीन का बच्चों पर असर जानने के लिए हाल ही में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी सेंटर ऑफ डेवलपिंग चाइल्ड में हुए एक शोध हुआ। इसमें सामने आया कि 9 साल की उम्र तक ज्यादा समय मोबाइल या टैबलेट के साथ बिताने वाले बच्चों की एकेडमिक परफॉर्मेंस घटती है। मानसिक स्वास्थ भी बिगड़ता है। शोध में बताया गया कि ऐसे बच्चों को बचपन में मोबाइल थमाना उनसे बचपन छीनने जैसा होता है। इससे ज्यादा उन्हें बड़ों से बातचीत करने देना ज्यादा जरूरी है। इसके अलावा उन्हें सोशल एक्टिविटी या शारीरिक गतिविधियां कराने की भी जरूरत है, ताकि शारीरिक और मानसिक विकास हो सके।ऐसे बच्चे भावनात्मक रूप से काफी कमजोर होते हैं। इसका असर लड़कों में ज्यादा होता है। एक अन्य शोध के अनुसार

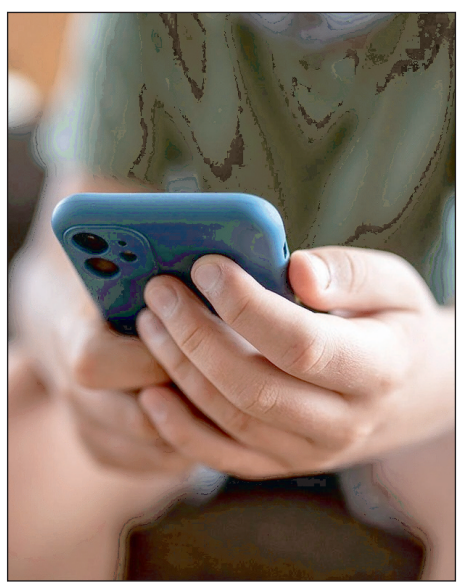

स्क्रीन टाइम बढ़ने से बच्चों में चिड़चिड़ापन बढ़ जाता है और वे कई बार चुनौतीपूर्ण माहौल में आक्रामक व्यवहार करने लगते हैं। इससे बच्चों की फिजिकल एक्टिविटी तो कम होती ही है।